

“ कवि कोदूराम दलित के काव्य में ग्रामीण चेतना ”

प्रो. मंगली बंजारा

सहायक प्राध्यापक(हिन्दी)

शास.के.आर.डी.महाविद्यालय

नवागढ़, जिला-बेमेतरा (छ.ग.)

सारांश:- कोदूराम दलित के काव्य में ग्रामीण जीवन की अवधारणाएँ, शोषण, संघर्ष, समाज में ऊँच-नीच की भावना, छुआछूत, वर्ग संघर्ष, आर्थिक विषमताएँ, अमीर-गरीब जैसी विषय मूलक ग्रामीण सामाजिक आघात की प्रतिक्रिया, ग्रामीण जनजीवन व समाज के नियमों एवं विधानों का चित्रण, कृषक जीवन चित्रण का स्वर, ग्रामीण चेतना के मानदण्ड है।

प्रस्तावना :- कवि युग परिवेश से प्रभावित होता है। जो सामाजिक ग्रामीण जीवन के साथ प्रतिबद्ध होता है। वह अपने काव्य को प्रभावशाली बनाता है। कवि ग्रामीण समाज का सदस्य होने के कारण उनका सृजन क्षेत्र ग्रामीण चेतना से जुड़ा रहता है। एक कवि समाज का प्रतिनिधित्व करता है। तो उनके साहित्य में ग्राम का प्रतिबिम्ब रहता है। ग्रामीण जन के संघर्ष कवि दलित की कविताओं में प्रतिफलित हुआ है। कवि ने ग्रामीण चेतना के विभिन्न मूल्यों को उनके समकालीन सन्दर्भों के साथ प्रमाणिक ढंग से अभिव्यक्त किये हैं। किसी छोटे गांव में शिक्षा की स्थिति और गंभीर होती है। शिक्षा सुविधाओं का अभाव खटकता है। ग्रामीण विद्यार्थियों को शिक्षा के लिए गांव छोड़ना पड़ता है। इस स्थिति से स्वयं कवि को गुजरना पड़ा है। ग्रामीण जीवन में शिक्षा का अभाव, विसंगतियां ज्यादा होती थी, यहां लोग न आर्थिक रूप से सम्पन्न थे न शिक्षा के प्रचार-प्रसार के सुविधाएं थे इसलिए गांव, नगरों के अपेक्षा आर्थिक पिछड़ा हुआ था। कवि ने अपनी कविताओं में श्रमिकों और किसानों को काव्य में विशिष्ट स्थान देकर युगीन परिस्थिति के प्रति ध्यान आकर्षित किया है। दलित जी मूलतः एक छत्तीसगढ़ी कवि थे, उस समय आजादी का घोर संघर्ष चल रहा था और अपने विचारों को गरीब जनता तक पहुंचाना चाहते थे, तो उन्होंने छत्तीसगढ़ी भाषा को माध्यम के रूप में चुना और गद्य, पद्य दोनों में समान गति के साथ काव्य की रचना किए।

कवि कोदूराम दलित के काव्य में ग्रामीण चेतना :- ग्रामीण जीवन की विभिन्न भूमिकाओं की सृष्टि के मूल में कवि की व्यापक दृष्टिकोण व्यंजित हुई। उसकी कविताओं में व्यापक युग दर्शन का परिचायक है। कवि कविताओं और ग्रामीण समाजीकता दोनों के महत्व को स्वीकारता है। कवि ने कविता में जुझारू किसान व मजदूर को कविता में अभिव्यक्त किया है। और ग्रामीण समाज से जुड़कर उनकी संवेदनाओं को अनुभव किया है। उसे कविता के माध्यम से जन-जन तक पहुंचाया है। कवि का रचनात्मकता का आधार ग्रामीण था। राह उन्ही की चलते जावें में उन्होंने समता मूलक समाज परिकल्पना की है। उन्होंने इस कविता के माध्यम से जनहित में काम करने व समाज के लिए विषमता दुर करने का संदेश दिया है। वे लिखते हैं कि-

जो अपने सारे सुख तजकर

जन-हित करने में जुट जावें

दुर विषमताएँ कर-कर के

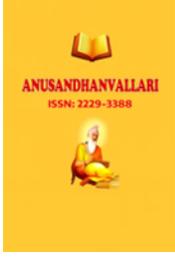
जो समाज में समता लावें।

“ सर्वोच्च स्थान ” नामक कविता में गुरु के महत्ता को प्रतिपादित किया है कि गुरु का पद अपने आप में अलग स्थान रखता है। अर्थात् – गुरु हमारे जीवन को गढ़ने में क्या-क्या भूमिका निभाता है। और कैसे अपने शिष्य को अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाता है। और विद्या का दान करके एक प्रतिभावान व्यक्ति का निर्माण करता है।

मात-पिता, मित्र, भगवान इन सबसे गुरुदेव महान

देकर के विद्या का दान गढ़े शिष्य जो प्रतिभावान

सब ग्रन्थों में मिले प्रमाण गुरु का है सर्वोच्च स्थान।



उस समय किसानों पर कवि का ध्यान आकर्षित हुआ जो आर्थिक रूप से कृषि पर निर्भर से ऐसे ग्रामीण समस्या को कवि ने सजीव रूप दिया कि किस तरह एक कृषक अपने लहु, पसीना एक करके कठिन मेहनत करके फसल उत्पन्न करता है। उसका सम्मान कविता में देखा जा सकता है—

लहु—पसीना करके एक, उपजाता है फसल अनेक
क्या जुआर क्या गेहु धान, होता है उसका सम्मान।

“ बापू की स्मृति ” नामक कविता में कवि ने छ.ग. के ग्रामीण लोगों को अहिंसा के प्रति ध्यान आकर्षित कराने का प्रयत्न किये हैं। और वे गांधीवादी विचारधारा से प्रेरित भी थे—

जय—जय अमर शहीद जय, सुख—सुराज तरु—मूल
तुम्हें चढ़ाते आज हम, श्रद्धा के दो फूल ॥

जय — जय राष्ट्रपिता अवतारी
जय निज मातृभूमि मय हारी
जय—जय सत्य—अहिंसाधारी
विश्व प्रेम के परम पुजारी ॥

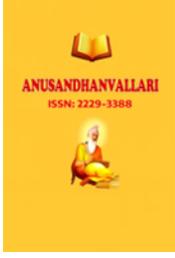
वर्षा ऋतु चार महीने का सुन्दर वर्णन ‘चौमासा’ नामक कविता में किये हैं। ग्रामीण जीवनशैली में चौमासा एक महत्वपूर्ण धार्मिक और सांस्कृतिक अवधि है। जिसमें, कई अनुष्ठान, त्योहार और व्रत किये जाते हैं। चौमासा वर्षा ऋतु का समय होता है जिसमें चारों ओर पानी भरा रहता है। और प्रकृति हरी-भरी हो जाती है। कृषि कार्य के लिए महत्वपूर्ण समय होता है। यह समय धार्मिक, सांस्कृतिक और कृषि के लिए महत्वपूर्ण है—

घाम दिन गइस, आइस बरखा के दिन
गील होंगे माटी चिखला बनिस धुरा हर
बपुरी बसुधा के बुताइस पियास हर
हरियागे भुइयां सुग्घर मखमल सही
जामिस हे बन, उल्होइस कांदी—घास हर

“ पशु पालन ” में पशु प्रेम की संस्कृति की झलक मिलती है। यहां गायें दुध देने के लिए उपयोगी तो हैं ही, वे ग्रामीणजन के सुख—दुख का आधार भी हैं। पशुपालन गांव के लोगों के जीवन का अनिवार्य हिस्सा है। पशुपालन के साथ किसानों की कठिनाईयां किसानों का श्रम, मेहनत की झलक मिलती है। कवि ने कहा है कि हर किसान को पशु—पक्षी को पालना चाहिए। जिससे उत्पादन भी बढ़ेगी और खाद की समस्या भी दूर होगी—

“ पालो गाय, भइस अऊ छेरी दही दुध पाये बर
पोसी कुकरी—बदक, गारे बेचे बर अऊ खाय बर
बने किसम के पशु—पंछी अब पालना चाही
बढ़िही उत्पादन हर, खाद्य समस्या हल हो जाही ॥

रक्षा बंधन त्योहार, भाई—बहन के अटुट प्रेम और बंधन का प्रतीक है। इस विशेष अवसर पर बहने अपने भाइयों को राखी बांध कर उनकी रक्षा का वचन लेती है। और अपनी बहनों की रक्षा का वादा करते हैं लेकिन “ राखी के परन ” कविता में बहने भाई को कह रही है कि वो देश को आगे बढ़ाने में सहयोग करें—



“ एके चीज मांगत हौं, आज सहकारिता से
तहू पार करे लाग, भारत के नइया।।

निष्कर्ष :- निष्कर्ष में मैं कह सकती हूँ की कोदूराम दलित के कविता में ग्राम्य जीवन का दर्द और खुशी अनेक परिस्थितियों में वर्णित है। उनकी सृजनात्मकता ग्रामीण जन-जीवन की दृष्टिकोण से उपयोगी कही जा सकती है।
संदर्भ ग्रंथ :-

1. बहुजन हिताय बहुजन सुखाय पृष्ठ संख्या 01
2. बहुजन हिताय बहुजन सुखाय पृष्ठ संख्या 02
3. बहुजन हिताय बहुजन सुखाय पृष्ठ संख्या 37
4. बहुजन हिताय बहुजन सुखाय पृष्ठ संख्या 72
5. बहुजन हिताय बहुजन सुखाय पृष्ठ संख्या 76
6. बहुजन हिताय बहुजन सुखाय पृष्ठ संख्या 77
7. बहुजन हिताय बहुजन सुखाय पृष्ठ संख्या 78
8. प्रतिक्रिया एक कविता — भारती जैन
9. इन्टरनेट